श्रम विभाजन और जाति प्रथा

बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर

पाठ के साथ

1- जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर ने क्या तर्क दिया है?

उत्तर- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर ने निम्न तर्क दिए हैं-

(i)- जाति-प्रथा श्रम का विभाजन नहीं करता बल्कि श्रमिकों का विभाजन करता है, क्योंकि जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को अपनी रूचि, कुशलता और योग्यता के आधार पर कार्य चुनने का अधिकार नहीं है।

(ii)- औद्योगिक प्रक्रिया और तकनीकी विकास के कारण कई कुटीर उद्योग समाप्ति के कगार पर हैं, फिर भी जाति-प्रथा के कठोर नियम पेशा परिवर्तन की अनुमति नहीं देता है।

(iii)- पहले से ही निर्धारित कार्य को व्यक्ति अरूचि के साथ विवशतापूर्वक करता है। अतः उसकी क्षमता और योग्यता के साथ न्याय नहीं हो पाता।

- निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि जाति-प्रथा श्रमिक विभाजन है क्योंकि यह योग्यता के आधार पर कार्य करने की छूट नहीं देता।

2- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर- भारतीय समाज में दोषपूर्ण प्रथा बच्चे के जन्म से ही

उसके पेशे का निर्धारण कर देती है। यह न केवल
उसके पेशे का निर्धारण कर देती है। यह न केवल उसके पेशे का निर्धारण करती है बल्कि आजीवन उसमें बाँध देती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में अथवा समय की माँग के अनुसार यदि पेशा परिवर्तन की आवश्यकता पड़ती भी है तो कट्टर जाति-व्यवस्था पैतृक पेशे के अलावा अन्य पेशा चुनने की अनुमति नहीं देता। इससे बेरोजगारी और भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। किंतु वर्तमान समय में स्थिति परिवर्तित हो चुकी है। कानूनी स्वतंत्रता के साथ-साथ उन्हें सामाजिक छूट भी मिलने लगी है। जातिवादी कट्टरता कम होने लगी है तथा निम्न वर्ग भी अपनी रुचि के अनुसार अपना पेशा चुनने को स्वतंत्र है।

3- लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर- लेखक के अनुसार केवल कानूनी पराधीनता ही दासता नहीं है बल्कि समाज के कुछ प्रभावशाली लोगों द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करने के लिए बाध्य होना भी दासता है। जैसे भारत के जाति-व्यवस्था में उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लिए कुछ व्यवहार व कर्तव्य निर्धारित कर देते हैं और निम्न वर्ग को इन निर्धारित कार्यों को करने के लिए विवश होना पड़ता है, यह भी एक प्रकार की दासता है।

4- शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर - डॉ० अंबेडकर यह जानते थे कि वंश परंपरा और सामाजिक परंपरा की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता होना संभव है

इसीलिए समता का व्यवहार सिद्धांत के रूप में अपनाया जाना चाहिए। लेखक तर्क देता है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो प्रारंभ से ही सभी लोगों को समान अवसर उपलब्ध कराए जाएँ तथा समाज के संपर्क के लिए अनेक साधन दिए जाएँ, समाज द्वारा से सबके अधिकारों की रक्षा की जाए और सबकी क्षमता को विकसित होने का पूरा अवसर दिया जाए तभी सबकी क्षमता व योग्यता के द्वारा समाज न्याय कर सकता है।

5- सही में अंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर- जाति-प्रथा के आधार पर श्रम विभाजन करना सर्वथा अनुचित है क्योंकि इससे न व्यक्ति की क्षमता व योग्यता का पूरा उपयोग किया जा सकता है, न ही समाज के द्वारा उसकी कुशलता का लाभ उठाया जा सकता है। यह मनुष्य के भौतिक स्तर को निम्न बनाता है तथा उसे ऊपर उठने का मौका नहीं देता है।

हम अंबेडकर के तर्क से पूरी तरह सहमत हैं कि मनुष्य को प्रशिक्षण दिए बिना तथा उसके कुशलता की परवाह किए बिना पेशा निर्धारित करना अनुपयुक्त है क्योंकि जाति प्रथा किसी भी स्थिति में मनुष्य को पेशा बदलने की अनुमति नहीं देता जो अमानवीय है। अतः मनुष्य की भौतिक विकास एवं जीवन में सुविधाओं की उन्नति के लिए जाति-प्रथा का उन्मूलन आवश्यक है।

6- आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे?

उत्तर- भ्रातृता शब्द संस्कृत के भ्रातृ धातु में ता प्रत्यय लगाने से बनता है। व्यापक संदर्भ में इसका अर्थ है 'भाईचारा'। लेखक के द्वारा दिए गए आदर्श समाज में तीन तत्व समता, स्वतंत्रता और भ्रातृता समाहित है। इसमें भ्रातृता को छोड़कर अन्य दोनों तत्वों के लिए स्त्री व पुरुष दोनों का पृथक विभाजन नहीं किया गया। स्त्री समाज का अभिन्न अंग है। स्त्रियों के बिना समाज की कल्पना असंभव है। समाज में आधी भागीदारी स्त्री है। अतः यहाँ भ्रातृता शब्द का प्रयोग स्त्री व पुरुष दोनों के संदर्भ में बंधुत्व के रूप में किया गया है।

गद्यांश पर आधारित -

जाति प्रथा _ _ - _ _ _ _ - पड़ते हैं।

(1) जातिप्रथा के पोषक किस स्वतंत्रता को स्वीकार करते हैं।
(क) संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता (ख)- शारीरिक सुरक्षा की स्वतंत्रता
(ग) जीवन की स्वतंत्रता (घ)- उपर्युक्त तीनों

(2)- जाति प्रथा के पोषक किस स्वतंत्रता को स्वीकार नहीं करते-
(क) संपत्ति की स्वतंत्रता (ख) जीवन की स्वतंत्रता
(ग) व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता (घ). सुरक्षा की स्वतंत्रता

(3)- दासता के लक्षण है -
(क)- कानूनी पराधीनता (ख) - दूसरों को दबाकर रखना

(ग) उपर्युक्त दोनों (घ)- इनमें से कोई नहीं।

4- पराधीनता का अर्थ है-
(क) स्वेच्छा से कार्य करना (ख) रुचि से कार्य करना
(ग)- भेदभाव रहित कार्य करना (घ)- दूसरों के अधीन रहकर कार्य करना

5- पराधीनता में प्रयुक्त प्रत्यय बताइए?
(क) पर (ख) परा (ग) ता (घ)- अधीन

अति लघुत्तरीय प्रश्न -

1- जाति-प्रथा बेरोजगारी का प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है
उत्तर - पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर, जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

(2) जाति प्रथा मनुष्य को कैसे निष्क्रिय बना देती है?
उत्तर - जाति प्रथा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्मशक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

(3)- लेखक के अनुसार लोकतंत्र क्या है?
उत्तर - लेखक के अनुसार लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज में सम्मिलित अनुभवों का आदान-प्रदान है।

4- भ्रातृता का क्या अर्थ है?
उत्तर - भाईचारा। जिसमें बाधा न हो। सभी एक-दूसरे के हितों को समझें।

5- श्रम-विभाजन का क्या अर्थ है?
उत्तर - अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण श्रम विभाजन है।